अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर.

-::- प्र मा ण प त्र -::-

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघुशोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

कोल्हापुर
दिनांक : 29 जून, 1996

01-07-96
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur-416 004

* * * * *

डॉ. के. आर. पाटील
एम.ए., पी.एच.डी.,
हिन्दी विभाग,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज.

-::- प्रमाणपत्र -::-

मैं प्रमाणित करता हूँ, **श्री.अशोक विठ्ठल तोडकर** ने **शिवाजी विश्वविद्यालय** की **एम्.फिल (हिन्दी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "**धर्मवीर भारती के उपन्यासों का मुल्यांकन**" का अनुशीलन मेरे निर्देशन में सफलता-पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है और इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझाओंका पूर्णतः पालन किया है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है । शोध-छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ ।

गडहिंग्लज,
दिनांक: 28 जून, 1996

शोध-निर्देशक
(डॉ. के. आर. पाटील)

* * * * *

-::- प्र ख्या प न -::-

"धर्मवीर भारती के उपन्यासों का मूल्यांकन" यह लघु–शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो **शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर** की **एम्.फिल्.** उपाधि के हेतु प्रथमतः ही प्रस्तुत की जा रही है ।

स्थान – करडयाळ

दिनांक – 28 जून, 1996

श्री. अशोक विठ्ठल तोडकर
शोध–छात्र

* * * * *

:: प्राक्कथन ::

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध का विषय है – **"धर्मवीर भारती के उपन्यासों का मूल्यांकन।"** धर्मवीर भारती आधुनिक युग के जाने–माने बहुमूखी, प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है । उन्होंने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी का कौशल्य दिखाया है । उनका साहित्य "मध्यमवर्गीय समाज" का दर्पण है । उन्होने इस समाज के गुण–दोषों को कुशलतापूर्वक व्यक्त किया है । उनके साहित्य में समाज हित एवं देशहित की भावना छीपि हुयी है ।

हिन्दी साहित्य की सभी विधाओंमें से मैं उपन्यास विधा से प्रभावित हूँ । लेखकोंके आदर्श, लोकप्रिय उपन्यास पढना, मुझे अच्छा लगता है । उपन्यास साहित्य की एक स्वतन्त्र विधा है । इसमें मानव–जीवन का कल्पना परक यथार्थ चित्रण रहता है । उपन्यास दैनिक जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं का वर्णन करता है । अतः आज के उपन्यासो में उपन्यासकार स्वयं जीता है, जीवन को पहले अनुभव करता है और फिर लिखता है । भारतीजी के उपन्यास इसके उत्तम उदाहरण है । भारतीजीने मात्र दो उपन्यास लिखे है । धर्मवीर भारती के दो उपन्यास "गुनाहों का देवता" और "सूरज का सातवाँ घोडा" स्वयं लीखित है । यह दो कृतियाँ एम.फिल के शोध कार्य के हेतू काफी है ।

धर्मवीर भारती का "ग्यारह सपनों का देश" उपन्यास स्वतंत्र कृति नही है । यह उपन्यास दस लेखकोंने लिखा हुआ, संयुक्त लेखन है । अतः इसीलिए मैंने इस उपन्यास का मूल्यांकन नही किया है ।

बी.ए. पढते समय मैंने "हिन्दी साहित्य का इतिहास" का अध्ययन किया है । इसका अध्ययन करते समय मुझे बहुचर्चित उपन्यासोंकी धर्मवीर भारती के दोनों उपन्यासोंकी जानकारी मिली । तब से मुझे भारती के प्रति रुचि पैदा हुई थी, अतः मैंने एम्.फिल. के लघु शोध–प्रबन्ध का विषय **"धर्मवीर भारती के उपन्यासों का मूल्यांकन"** रखा । मेरे सौभाग्य की बात है कि – मुझे इस विषय के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय की संमत्ती मिली है।

प्रायः सभी शोध–छात्र किसी भी रचना (उस विधा) के तत्वों के आधार पर मुल्यांकन करते है । मैंने भी इसी प्रथा का अवलम्ब किया है किन्तु दोहरावट से बचने के लिए केवल मैंने कथावस्तु को टाल दिया है । पूरे शोध ग्रंथ का अध्ययन करने पर पाठकर सहज ही दोनों उपन्यासों के कथानक से अभिभुत होता है तथापि कथानक की जानकारी के बिना यह प्रबन्ध अधूरा न लगे इसलिए उसका संकेत उपसंहार में दिया गया है ।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध को मैने कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया है । जिनमें से पहला अध्याय लेखक से सम्बन्धित है और बाकी उनकी रचनाओं से ।

प्रथम अध्याय : धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

इस अध्याय को मैंने धर्मवीर भारतीजी के जीवन परिचय के अन्तर्गत जन्म, शिक्षा, परिवार, स्वभाव, अभिरुचीं, नौकरियाँ, सन्मान एवं प्रतिष्ठा याने कि व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है । कृतित्व के अन्तर्गत कविता, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, निबन्ध तथा पत्रकार के रुप में भारतीजी के रचनाओं का नामनिर्देश किया है ।

द्वितीय अध्याय : धर्मवीर भारती के उपन्यासों के पात्र ।

द्वितीय अध्याय के प्रारंभ में उपन्यास में चरित्र–चित्रण का निर्माण और उपन्यास में चरित्र–चित्रण का महत्व बताया है । उपन्यासों के पात्रों का विभाजन प्रमुख और गौण पात्रों के अन्तर्गत किया है । उनका चरित्र–चित्रण करके विशेषताएँ बतायी है ।

तृतीय अध्याय : धर्मवीर भारती के उपन्यासों में संवाद एवं भाषाशैली ।

इसमें मैने पहले संवाद की उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्ता, उद्देश्यपूर्णता, नाटकीयता आदि गुणों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत उपन्यासों का सोदाहरण विवेचन किया है । साथ ही कथोपकथन के कार्यो का ही उल्लेख किया है ।

भाषा शैली के अन्तर्गत पहले भाषा और शैली का महत्व बताया है । साथ ही धर्मवीर भारती के उपन्यासों में भाषाशैली की सफलतापर विवेचन किया है ।

चतुर्थ अध्याय : धर्मवीर भारती के उपन्यासों का उद्देश्य ।

प्रारंभ में हिन्दी उपन्यास में उद्देश्य का स्वरुप बताया है । प्रस्तुत उपन्यासों में उद्देश्य के रुप में नर–नारी के नैतिक–अनैतिक सम्बन्ध, मध्यमवर्गीय समाज का यथार्थरुप, नारी शिक्षा का उद्धार रूढ़ि–परम्पराओं पर व्यंग्य, समाज की समस्याओं से परिचित कराना और संदेश शीर्षक के अन्तर्गत लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करने का मैंने प्रयत्न किया है ।

पंचम अध्याय : धर्मवीर भारती के उपन्यासों में स्वप्न–मनोविज्ञान ।

इस अध्याय में मैंने स्वप्न का महत्व, स्वप्न के सम्बन्ध में विद्वानों की दृष्टि, आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में स्वप्न–मनोविज्ञान और उपन्यास साहित्य स्वप्नों की देन पर चर्चा की है । अंत में "गुनाहों का देवता" और "सूरज का सातवाँ घोडा" इन दो उपन्यासों में आए हुए स्वप्नों का मनो–वैज्ञानिक अध्ययन किया है ।

प्रत्येक अध्याय के अंत में उस अध्याय का निष्कर्ष दिया है, साथ ही उपसंहार में "गुनाहों का देवता" और "सूरज का सातवाँ घोडा" दोनों की कथावस्तु की विशेषताएँ बताकर संपूर्ण अध्याय का एकत्रित निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं । अंत में अनुसंधान की उपलब्धियाँ एवं नयी दिशाएँ भी स्पष्ट की हैं । परम्परानुसार शोधग्रंथ के अंत में आधारभूत एवं संदर्भ ग्रंथो की सूची प्रस्तुत की हे ।

ऋ ण – नि र्दे श

इस शोध–कार्य पूरा करने में मुझे जिन विद्वानों का मार्गदर्शन मिला उनके प्रति आभार प्रकट करना मै अपना परम–कर्तव्य समझता हूँ । यह लघु शोध–प्रबन्ध पूर्ण करने में मेरे गुरुवर्य **डॉ.के.आर्.पाटील** जीने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा में मार्गदर्शन किया ।

इस शोध–प्रबन्ध को पुरा करते वक्त शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय **डॉ.पी.एस.पाटीलजी** और भूतपूर्व विभागाध्यक्ष **डॉ.व्ही.के.मोरेजी** के सहकार्य के फलस्वरुप में यह कार्य पूरा कर सका हूँ । अतः उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

मेरे घरवालों में से मेरे **माता–पिता, बडे भाई आनंद तोटुकर** और **स्व.पूनम भाभी** इन लोगों की प्रेरणा, सहकार्य और दूवाएँ मेरे सर पर हमेशा रही । अतः इनके ऋण मै हमेशा रहूँगा, साथ ही उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ ।

मेरे परिवारिक जनों में मेरे मामाजी **श्री.पांडुरंग दळवी** की इच्छा थी कि, मैं अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करुँ । अन्य रिश्तेंदारों में से मै खासतौरपर **"साठे परिवार"** के सभी सदस्यों का आभारी हूँ, क्योंकि उनके मकान में रहकर मैने यह शोध–प्रबन्ध पूरा किया है । इन लोगों का ऋण चुकाने में मै असमर्थ हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, शिवराज महाविद्यालय गडहिंग्लज, देवचंद महाविद्यालय अर्जुननगर आदि ग्रंथालयों के ग्रंथपालों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ ।

इस लघु शोध–प्रबन्ध का टंकलेखन कोल्हापुर के **श्री.महेषसिंह उरुणकर** ने बडी तप्तरता के साथ एवं उत्तमरीति से पुरा किया, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ ।

अंत में इस कृति में होनेवाली त्रुटियों को स्वीकार करते हुए यह लघु शोध–प्रबन्ध आप के अवलोकन के लिए प्रस्तुत करता हूँ ।

स्थान : करडयाळ

दिनांक – 28 जून, 1996

श्री. अशोक तोडकर
शोध–छात्र

* * * * *